गुजरात से रामनगरी साइकिल चलाकर पहुंचा भक्त सहदेव

दो महीने में चलाई 2000 किमी

प्रभु श्रीराम की लगन इस कदर लगी कि दो माह में 2000 किमी से अधिक दूरी साइकिल से तय करके रामनगरी पहुंच गए। मन में आस्था की हिलोरें संग गुजरात के युवा सहदेव यश पटेल साइकिल से अयोध्या पहुंचे। साइकिल पर भगवा ध्वज धारण किए सहदेव की हर पैडिल पर मुख से जय श्रीराम का उद्घोष निकलता रहा और आस्था के पथ पर उनके पांव कहीं नहीं डिगे।

उनका मामना है कि 500 वर्ष के बाद ऐसा रामयुग आया है जिसका साक्षी बनने के लिए बिना न्यौते के रामनगरी पहुंच गया।

आगामी 22 जनवरी को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा है। गुजरात के सहदेव के मन में राम दर्शन की धुन सवार हुई और 14 नवम्बर को साइकिल से बिना पैसे के घर से निकल पड़े। सहदेव हरिद्वार स्नान के बाद उज्जैन, मथुरा, भोलेश्वरनाथ होकर रामनगरी पहुंचे। इन्होंने विश्राम के लिए मंदिरों को ही ठिकाना बनाया और रात्रि विश्राम के बाद पुन साइकिल से अगले पड़ाव के लिए निकल पड़ते थे। सहदेव की मानें तो इन्हें बिना पैसे के बाद भी राह में कोई बाधा नहीं आई।

राम मंदिर के लिए 30 साल से मौन व्रत

बुजुर्ग महिला सरस्वती देवी के परिवार ने बताया किया कि 1992 में जिस दिन बाबरी मस्जिद को ध्वस्त किया गया था, उसी दिन सरस्वती देवी ने प्रतिज्ञा की थी कि वह मौन व्रत तभी तोड़ेंगी जब राम मंदिर का उद्घाटन होगा।

झारखंड की 85 वर्षीय महिला 22 जनवरी को अयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन के बाद अपना 30 साल का व्रत तोड़ेंगी। बुजुर्ग ने साल 1992 में राम मंदिर के बनने को लेकर मौन व्रत धारण किया था। अब 22 जनवरी को उनका सपना सच होने के बाद तीन दशक से जारी अपना मौन व्रत तोड़ेंगी। मंदिर का उद्घाटन देखने के लिए धनबाद निवासी सरस्वती देवी सोमवार रात ट्रेन से उत्तर प्रदेश के अयोध्या के लिए रवाना हुई।

बुजुर्ग महिला सरस्वती देवी के परिवार ने बताया किया कि 1992 में जिस दिन बाबरी मस्जिद को ध्वस्त किया गया था, उसी दिन सरस्वती देवी ने प्रतिज्ञा की थी कि वह मौन व्रत तभी तोड़ेंगी जब राम मंदिर का उद्घाटन होगा। देवी को अयोध्या में मौनी माता के नाम से जाना जाता है। वह सांकेतिक भाषा के माध्यम से परिवार के सदस्यों के साथ संवाद करती हैं। वह लिखकर भी लोगों से बात करती हैं लेकिन जटिल वाक्य लिखती हैं।

उन्होंने %मौन व्रत% से कुछ समय का विराम लिया था और 2020 तक हर दिन दोपहर में एक घंटे बोलती थीं। लेकिन जिस दिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंदिर की नींव रखी उस दिन से उन्होंने पूरे दिन का मौन धारण कर लिया। बुजुर्ग सरस्वती देवी के सबसे छोटे बेटे 55 वर्षीय हरेराम अग्रवाल ने मीडिया से बात करते हुए बताया, छह दिसंबर, 1992 को जब बाबरी मस्जिद को ध्वस्त किया गया था तब मेरी मां ने अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण तक मौन धारण करने की शपथ ली थी। जब से मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा की तारीख की घोषणा की गई है तब से वह बहुत खुश हैं। बाघमारा ब्लॉक के भौंरा निवासी हरेराम ने कहा, वह सोमवार रात धनबाद रेलवे स्टेशन से गंगा-सतलज एक्सप्रेस से अयोध्या के लिए रवाना हुई। वह 22 जनवरी को अपना मौन तोड़ेंगी। उन्होंने कहा कि देवी को महंत नृत्य गोपाल दास के शिष्यों ने राम मंदिर उद्घाटन कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया है। परिजनों ने कहा कि चार बेटियों सहित आठ बच्चों की मां सरस्वती देवी ने 1986 में अपने पति देवकीनंदन अग्रवाल की मृत्यु के बाद अपना जीवन भगवान राम को समर्पित कर दिया और अपना अधिकांश समय तीर्थयात्राओं में बिताया। वो अभी अपने दूसरे बेटे

22 जनवरी को पूरी होगी बुजुर्ग महिला की शपथ

नंदलाल अग्रवाल के साथ धनबाद के धैया में रह रही हैं। नंदलाल की पत्नी इन्नू अग्रवाल (53) ने कहा कि शादी के कुछ महीने बाद ही उन्होंने अपनी सास को भगवान राम की भक्ति में मौन व्रत धारण करते हुए देखा। इन्नू अग्रवाल ने बताया, वैसे तो हम उनकी ज्यादातर सांकेतिक भाषा समझ लेते हैं और लेकिन वह लिखकर जो बात करती हैं उनमें कठिन शब्द लिख देती हैं। उन्होंने कहा, बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद मेरी सास ने अयोध्या का दौरा किया और राम मंदिर के निर्माण तक मौन व्रत का संकल्प लिया। वह दिन में 23 घंटे मौन रहती हैं। दोपहर में केवल एक घंटे का विराम लेती हैं। बाकी समय वह कलम और कागज के माध्यम से हमसे संवाद करती हैं।

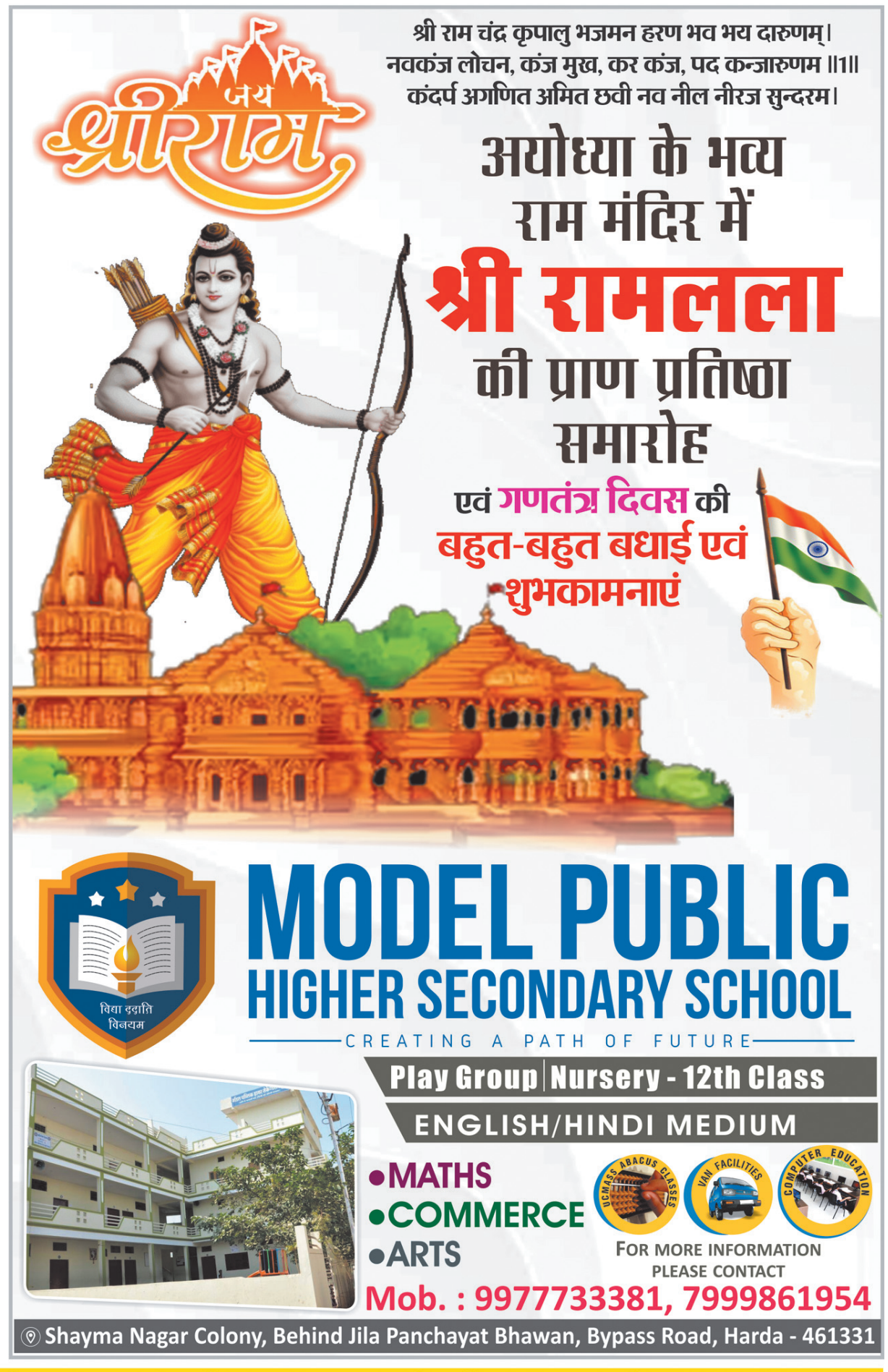

कृपया आज के अंक को पढ़ने के उपरांत संकलित करके रखे, रद्दी करने से बचाए। चूंकि इसमें प्रभुश्री के चित्र एवं लेखन प्रकाशित किया गया है। - निवेदक : सभी भक्तगण